दृष्टि The Vision

19 AUG 2019

drishti

ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

DTVF/19(JS)–ESY-E4

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

Name: Devendra Prakash meena

Mobile Number:

Medium (English/Hindi): Hindi

Reg. Number: x 7102

Center & Date: DL & 18/08/19

UPSC Roll No. *(If allotted)*:

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका मे खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

खंड A और B में प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबंध लिखिये, जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों का हो: **125 × 2 = 250**

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Section A and B, in about 1000–1200 words each: **125 × 2 = 250**

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।

(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION –A

1. सोशल मीडिया : सामाजिक कम व्यक्तिगत ज़्यादा।

   Social media : More personal than social.

2. भारत में सामाजिक सशक्तीकरण की प्रक्रिया में आरक्षण का योगदान तथा इसके विरोधाभास।

   The role of reservation in social empowerment in India: Contribution and Contradiction.

3. भूमंडलीकरण के दौर में संरक्षणवादी नीतियाँ अल्पकालिक हितों की पूर्ति से ज़्यादा कुछ नहीं है।

   Protectionist measures in the era of globalization are nothing more than the fulfilment of short-term interests.

4. जलवायु परिवर्तन : करे कोई भरे कोई।

   Climate Change : Done by someone and paid by someone else.

खंड–B / SECTION –B

1. एक सुखी जीवन प्रकृति से प्रेरित एवं सहजता से संचालित होता है।

   A good life is the one inspired by nature and conducted with ease.

2. व्यावहारिकता आदर्श की पुष्टि करती है।

   Pragmatism affirms the ideal.

3. मूल्यविहीन शिक्षा व्यक्ति को चतुर शैतान बनाती है।

   Education without values makes man a cleverer devil.

4. विकसित होते भारतीय समाज का द्वंद्व।

   Conflicts in developing Indian society.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION –A

1. सोशल मीडिया : सामाजिक कम व्यक्तिगत ज़्यादा।

   Social media : More personal than social.

2. भारत में सामाजिक सशक्तीकरण की प्रक्रिया में आरक्षण का योगदान तथा इसके विरोधाभास।

   The role of reservation in social empowerment in India: Contribution and Contradiction.

3. भूमंडलीकरण के दौर में संरक्षणवादी नीतियाँ अल्पकालिक हितों की पूर्ति से ज़्यादा कुछ नहीं है।

   Protectionist measures in the era of globalization are nothing more than the fulfilment of short-term interests.

4. जलवायु परिवर्तन : करे कोई भरे कोई।

   Climate Change : Done by someone and paid by someone else.

सोशल मीडिया : सामाजिक कम व्यक्तिगत ज्यादा

" घिरा हुआ हूं मैं हर तरफ से,
है आइने में हवा की दरख्त ।"

उक्त पंक्तियाँ वर्तमान विश्व की उस स्थिति को बयाँ करती है, जिसमें वह एक ऐसे दोराहे पर खड़ा है, जिसके एक ओर नजर घुमाते ही सब कुछ अच्छा प्रतीत होता है। इसमें सबकुछ वसुधैव कुटुम्बकम, तथा सर्वे भवन्तु सुखिनः को पूर्ण करने में प्रयासरत है किन्तु इसका दूसरा पहलू अत्यन्त भयावह है। जो मानवता को

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

भयानक अंधकार में ले जाने की कोशिश में रत है। इसमें एक आभासी दुनिया से प्रारंभ हुई हिंसा वास्तविक रूप धारण कर मुजफ्फरनगर से होते हुये गौरी लंकेश को अपने अंधकार में समा चुकी है और अनवरत जारी है। क्या इसी अंधकार के लिए सोशल मीडिया का विकास हुआ था? क्या इसी सामाजिकता की पूर्ति के लिए सोशल मीडिया ने जन्म लिया था? क्या वास्तव में सोशल मीडिया 'सामाजिक' है या फिर पर्सनल मीडिया का रूप धारण कर चुका है?

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

सबसे पहले विचारणीय प्रश्न है कि सोशल मीडिया का विकास क्यों किया गया था और इसका समाज ने कैसे लाभ उठाया। जब विश्व में लगातार वैश्वीकरण का दौर था, तब वैश्विक ग्राम की अवधारणा को पूरा करने के लिए सोशल मीडिया का विकास किया गया। इसके प्रभावों के आधार पर ही इसे सोशल मीडिया नाम दिया गया किन्तु कालान्तर में यह अपने नाम का अतिक्रमण करते हुये एक पर्सनल मीडिया का रूप धारण कर चुका है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

सोशल मीडिया के प्रभावों की दृष्टि से देखा जाये तो यह प्रभाव सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनो किस्म के है, वहीं व्यक्तिगत तथा सामाजिक दृष्टिकोण से युक्त है। ऐसे में विश्लेषण किया जाना आवश्यक है कि सोशल मीडिया सामाजिक है अथवा व्यक्तिगत।

सोशल मीडिया ने समाज पर व्यापक सकारात्मक प्रभाव डाला। इसके द्वारा लोगों को तानाशाही के विरुद्ध एकजुट होने का हौसला प्रदान किया और अरब स्प्रिंग को सफल बनाकर अरब क्षेत्र में लोकतंत्र एवं मानवाधिकारों की पहुँच उपस्थित कराई।

सोशल मीडिया ने गवर्नेंस का माध्यम बदल दिया और जनता की भागीदारी को बढ़ाया। इसके माध्यम से जनता एवं प्रशासन में प्रत्यक्ष संवाद एवं शिकायत निवारण किया जाने लगा। ट्विटर पर रेलवे हेल्पलाइन तथा विदेश मंत्रालय की ट्विटर डिप्लोमेसी इसी सोशल मीडिया का सुखद स्वरूप है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

सोशल मीडिया ने लोगों को विभिन्न मानवीय गुणों - करुणा, संगठन, सहयोग, धैर्य आदि से भी रूबरू कराया। केरल बाढ़ या फिर क्राइस्टचर्च घटना में सोशल मीडिया ने जिस तरह लोगों को संगठित किया, वह सोशल मीडिया का वही प्रथम पहलू है, जिसके लिए इसका विकास किया गया। इसी संदर्भ में अमेरीका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा द्वारा ट्वीट ट्विटर पर नस्लीय भेदभाव समाप्त करने की मुहिम भी चलाई गई। उन्होंने कहा -

"यदि विश्व में कहीं समानता है, तो वह सोशल मीडिया में, क्योंकि यह व्यक्ति के रंग के आधार पर भेदभाव स्वीकार नहीं करता।"

सोशल मीडिया ने महिलाओं के प्रति नवीन दृष्टिकोण का विकास तो किया ही, साथ ही उन्हें एक सशक्त आन्दोलन #MeToo करने का प्लेटफार्म भी दिया। महिलाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एवं लैंगिक समानता के लिए अनेक

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

हैशटैग # Selfie with Daughter . # Yes I Bleed मानसिकता परिवर्तन में सहायक हुये।

सोशल मीडिया का सर्वाधिक लाभ हुआ - वैश्विक पर्यावरण संरक्षण अभियान को। इसने एक वैश्विक मंच बनाया और ग्लोबल वार्मिंग के खिलाफ लड़ने के लिए सरकारों पर दबाव बनाया। सोशल मीडिया के द्वारा लगातार इस तरह के हैशटैग आन्दोलन प्रभावी रूप से परिणाम ~~लक्ष्य~~ प्राप्ति में सफल रहे।

किन्तु इसके व्यक्तिगत लाभ भी कम न रहे। इसने एक ही रात में बिना किसी रचनात्मक क्षमता के, केवल शारीरिक रंग-रूप के आधार पर अनेक व्यक्तियों को प्रसिद्ध किया। अनेक लेखक फर्जी/ चुराई हुई स्क्रीप्ट/पुस्तक के माध्यम से प्रसिद्धि प्राप्त करने में सफल रहे।

यहाँ तक कि कुछ यू-ट्यूब चैनल, इंस्टाग्राम पेज केवल अश्लीलता फैलाने के बावजूद प्रसिद्धि पा रहे है। यू-ट्यूब पर 50 लाख लोगो द्वारा देखा गया 'तुझे मारने की

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

रही विधि वीडियों इसका उदाहरण है। कुछ अभिनेत्रियों ने अश्लीलता के द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त की, तो कुछ मेहनती एवं ईमानदार- सत्यनिष्ठ व्यक्तियों ने इससे वास्तविक प्रसिद्धि एवं रोजगार प्राप्त किया और वे उसके हकदार थे।

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों की फेहरिस्त भी लंबी है। इसके नकारात्मक प्रभावों में समाज की शांति भंग करने में इसकी भूमिका रही है। हेट स्पीच, फेक न्यूज के द्वारा लगातार अपने अंधकार को फैलाने के लिए प्रयासरत है।

इसी फेक-न्यूज एवं हेटस्पीच के कारण मुजफ्फरनगर जैसे दंगे हुये। जम्मू- कश्मीर जैसे केन्द्रशासित प्रदेश में पत्थरबाजों द्वारा इसका प्रयोग न केवल सामाजिक जीवन को अस्त- व्यस्त करता है, बल्कि प्रशासन के समक्ष भी चुनौती है।

ISIS जैसे आतंकवादी समूह द्वारा सोशल मीडिया पर हिंसक वीडियो डालकर युवाओं को

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

• भ्रमित किया जा रहा है। बढ़ते इस्लामी रेडिकलाइजेशन के पीछे इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। यूरोप एवं अमेरिका में लोन वुल्फ जैसी घटनाएँ एवं क्राइस्टचर्च घटना इसी आतंकवादी मानसिकता को दर्शाता है, जो लगातार अपने दूसरे पहलू को साकार करने में लगा हुआ है। 2000 के नये नोट में चिप होना हो, या फिर विमान को एलियन द्वारा अपहृत करने की घटना हो, फिर वर्तमान में बच्चा चोर गिरोह जैसी अफवाह हो, सोशल मीडिया ने सदा इसका समर्थन किया है।

किन्तु सोशल मीडिया के व्यक्तिगत नकारात्मक प्रभाव भी कम नहीं है। सबसे बड़ा दुष्प्रभाव हैंकिंग, स्टॉकिंग, साइबर बुलिंग के रूप में सामने आ रहा है, जिसने निजता का हनन तो किया ही, बल्कि ब्लू व्हेल, मोमो चैलेंज जैसे खतरनाक खेलों के माध्यम से बाल मन को दुष्प्रभावित किया। चाइल्ड पोर्नोग्राफी

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

को भी सोशल मीडिया ने सहायता प्रदान की। इसी संदर्भ में अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा भी है -

"आज इंटरनेट हमें देख रहा है, कल टीवी भी हमें देखेगा। इससे फायदा यह होगा कि ईज ऑफ लिविंग बेहतर होगी किन्तु हम राइट टू प्राइवेसी को देंगे।"

सोशल मीडिया ने एक आभासी दुनिया विकसित की है, जिसमें चारो तरफ धर्म, जाति, लिंग, देश, नस्ल आदि के नाम पर हिंसा पल रही है। एक-दूसरे की पोस्ट पर नस्लीय टिप्पणी करना, मान हानि जैसी घटनाएँ बढ़ रही है। कभी-कभी यह हिंसा खतरनाक रूप धारण कर वास्तविकता में प्रकट होती है, और गौरी लंकेश जैसी पत्रकार की हत्या हो जाती है और अनुराग कश्यप जैसे फिल्मकारों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार का परित्याग करना पड़ता है क्योंकि हत्या करने तथा परिवार को तबाह करने की धमकियां बार-बार दी जाती है। इसी संदर्भ में सोशल मीडिया की

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

अनामिता के संबंध में एक कवि ने लिखा भी है -

"जिनको हम समझते हैं,
अरक्षित।
वह्वा केवल वे ही होते हैं,
सुरक्षित।
देखो न!
कैसे
आहट सुनकर कवच में,
छुप गया वह,
घाघ।"

सोशल मीडिया ने व्यक्ति को आभासी समूह से जुड़ने का मौका प्रदान किया। वह अपने पांच हजार फेसबुकिया मित्रों तथा हजारों-लाखो इंस्टाग्राम-ट्विटर फालोअर्स पर दँभ भले ही भरता हो किन्तु वास्तविक जीवन में वह बेहद अकेला है। इसी अकेलेपन की पूर्ति के लिए आभासी दुनिया से जुड़ता है ताकि अपनत्व प्राप्त हो सके किन्तु आभासी दुनिया उसे केवल

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

आभास प्रदान करती है-

"हर तरफ हर जगह बेशुमार आदमी
फिर भी तन्हाईयो का शिकार आदमी।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि सोशल मीडिया के प्रभाव चाहे वह सकारात्मक हो अथवा नकारात्मक उनका प्रभाव व्यक्ति तथा समाज दोनो पर पड़ता है। ऐसे में सोशल मीडिया के चरित्र का निर्धारण एक जटिल प्रश्न है। चूंकि किसी भी एक पहलू को दूसरों से अलग नहीं किया जा सकता।

इस प्रकार सोशल मीडिया के चरित्र निर्धारण में उसकी मूल्य निरपेक्षता की भूमिका महत्वपूर्ण होगी अर्थात् सोशल मीडिया का चरित्र उसके प्रयोग कर्त्ता पर निर्भर करता है क्योंकि स्वयं में वह मूल्य निरपेक्ष है। ऐसे में समाज के लिए उपयोग किया जाये अथवा व्यक्तिगत माध्यम के लिए, यह समाज एवं व्यक्ति पर निर्भर करता है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

व्यक्ति समाज का ही एक हिस्सा है। ऐसे में व्यक्तिगत प्रभाव भी सामाजिक प्रभाव का ही एक भाग है। व्यक्ति से प्रारंभ हुआ हैशटैग आन्दोलन समाज का आन्दोलन बन जाता है। जैसे- भारत-पाक के बीच बालाकोट एयर स्ट्राइक के बाद #wewantpeace आन्दोलन। अतः

आवश्यकता है कि सामाजिक-व्यक्तिगत की बजाय सकारात्मक-नकारात्मक प्रभावों पर दृष्टि डाली जाये। महाकवि तुलसीदास ने भी कहा है -

"जाकी रही भावना जैसी,
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।"

अतः उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव समाज, राजनीति, पर्यावरण, अर्थव्यवस्था सभी पर व्यापक प्रभाव डालता है। ऐसे में सम्पूर्ण मानवता के हित कल्याण के लिए प्रयोगकर्ता

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

अर्थात् मानव-(समाज) को अपने स्वयं के ~~नजि~~ नजरियें में बदलाव लाना होगा क्योंकि सोशल मीडिया स्वयं में अपने मूल्य का निर्धारण नहीं करती।

"मेरी अगति का या प्रगति का,
यह मापदंड बदलो तुम,
जुएं के पत्ते-सा,
मैं अभी अनिश्चित हूं।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–B / SECTION –B

1. एक सुखी जीवन प्रकृति से प्रेरित एवं सहजता से संचालित होता है।

   A good life is the one inspired by nature and conducted with ease.

2. व्यावहारिकता आदर्श की पुष्टि करती है।

   Pragmatism affirms the ideal.

3. मूल्यविहीन शिक्षा व्यक्ति को चतुर शैतान बनाती है।

   Education without values makes man a cleverer devil.

4. विकसित होते भारतीय समाज का द्वंद्व।

   Conflicts in developing Indian society.

मूल्यविहीन शिक्षा व्यक्ति को चतुर शैतान बनाती है।

"घुन खाये शहतीरों पर की, बारहखड़ी विधाता बाँचे।
फटी भीत है, छत चूती है, आले पर बिस्तुईया नाचे
बरसाकर बेबस बच्चों पर मिनट-मिनट पाँच तमाचे
इसी तरह दुख हरन मास्टर गढ़ता है आदम के साँचे।"

उक्त पंक्तियाँ वर्तमान शिक्षा पद्धति के उस रूप को उजागर करती है, जो बच्चों को एक पौधे वस्तु की भाँति मानता है। इसी वस्तु पौधे में घरवालों द्वारा ट्यूशन-किताबों के माध्यम से ज्ञान-बीज डालकर जल्दी से जल्दी फल प्राप्ति की इच्छा की जाती है किन्तु घरवाले

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

इस बात से अनभिज्ञ रहते हैं कि आवश्यकता से अधिक खाद न केवल पौधे पर नकारात्मक प्रभाव डालता है, बल्कि पर्यावरण को जहरीला करता है और उपयोगकर्ता भी प्रभावित होता है। ऐसे में क्या वर्तमान में दी जा रही मूल्यविहीन शिक्षा उचित है? यह मानवता को किस ओर ले जा रही है? शिक्षा में किन मूल्यों का विकास आवश्यक है? आदि कई प्रश्न विचारणीय है।

सर्वप्रथम बात की जाये कि प्राचीन मूल्यों से युक्त शिक्षा पद्धति आखिर मूल्यविहीनता में कब परिवर्तित हो गई। इसके लिए हमें इतिहास के पन्ने पलटने की आवश्यकता है। गुरुकुल में शिक्षा की व्यवस्था का उद्देश्य ज्ञानार्थ प्रवेश, सेवार्थ प्रस्थान था किन्तु धीरे-धीरे सेवार्थ की बजाय केवल अर्थ (धन) शेष रह गया। ब्रिटिश काल ने भारतीय नैतिक मूल्यों का पतन इसलिए किया क्योंकि उन्हें एक ऐसा वर्ग चाहिए था, जो रंग रूप ~~आदि~~ में

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

भारतीय हो, किन्तु आचार - विचार - व्यवहार में ब्रिटिश हो।' यही शिक्षा पद्धति वर्तमान तक जारी है।

गांधी जी ने भी अपने द्वारा प्रतिपादित सात पाप के सिद्धांत में चरित्र रहित शिक्षा एवं संवेदना रहित विज्ञान दोनों को पाप माना है। ऐसे में यह प्रश्न महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि आखिर शिक्षा पद्धति में नैतिक मूल्यों का प्रवेश क्यों किया जाये तथा किन मूल्यों का समावेश हो।

~~देर~~ चूंकि एक बालक मिट्टी के ~~अर्धनिर्मित~~ घड़े की भाँति होता है, जिसे किसी भी रूप में ढाला जा सकता है। ऐसे में शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा का समावेश मानवीय मूल्यों करुणा, त्याग, समर्पण, आत्मविश्वास, सत्यनिष्ठा व सहयोग, सहिष्णुता आदि का विकास करता है, जो एक समाज, राष्ट्र एवं विश्व के सम्पूर्ण विकास के लिए आवश्यक होते हैं।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

जिन नैतिक मूल्यों की आवश्यकता है. उनमें लैंगिक समानता, नस्लीय संवेदनशीलता, जातीय, भाषायी एवं धार्मिक समता, संविधान के मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता तथा प्रकृति - पशु पक्षियों से प्रेम सम्मिलित है। इन गुणों का विकास व्यक्तित्व के विकास के लिए अनिवार्य पहलू है क्योंकि समाज के सम्पोषणीय विकास के लिए इन मूल्यों का विकास आवश्यक है।

शिक्षा पद्धति में मूल्यों के विकास एवं उसका राष्ट्र पर पड़ने वाले प्रभावों के संदर्भ मे पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने कहा भी है - "यदि किसी राष्ट्र को सशक्त एवं अच्छे मूल्यों से युक्त नागरिकों से युक्त बनाना है, तो माता-पिता तथा शिक्षकों को अपनी भूमिका निभानी होगी"

मूल्यों से युक्त शिक्षा ने प्राचीनकाल से वर्तमान तक वसुधैव कुटुम्बकम तथा सर्वे भवन्तु सुखिनः की अवधारणा को लगातार

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्थापित करने का प्रयास किया है। इसी मूल्ययुक्त शिक्षा ने राष्ट्रवाद की लहर को प्रसारित किया और अनेक उपनिवेशों ने मुक्ति प्राप्त की। नेल्सन मंडेला ने भी कहा है कि -

"शिक्षा वह अस्त्र है, जिससे हम परतंत्रता की सभी बेड़ियों चाहे-वह गरीबी- बेरोजगारी हो अथवा अंधविश्वास एवं भेदभाव को काट सकते है।"

अब बात की जाये कि आखिर मूल्य रहित शिक्षा के दुष्परिणाम क्या होंगे, जिसके कारण इसे चतुर शैतान की उपमा दी गई है। गौर करने पर हम पाते हैं कि वर्तमान में विश्व जितनी भी समस्याओं का सामना कर रहा है, वे सभी किसी न किसी रूप में मूल्यविहीनता से जुड़ी है। विश्व जिस अंधकार की ओर बढ़ रहा है, उसका मूल कारण विद्यालयी शिक्षा का समुचित रूप से बालमन को विकसित न कर पाना और चहुँओर व्याप्त भय - निराशा का कारण भी यह मूल्य रहित शिक्षा है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

वसुधैव कुटुम्बकम तथा वैश्विक ग्राम

जैसे मूल्यों से रहित शिक्षा ने विश्व को क्षेत्रवाद एवं संरक्षणवाद के दौर में पहुँचा दिया है, जहाँ केवल स्वार्थ का ही महत्व है और दूसरों के हितों को कुचलकर आगे बढ़ना सिखाया जाता है।

लगातार बढ़ती अतिवादी विचारधारा के मूल में भी, ~~कुरान~~ धार्मिक ग्रंथों की शिक्षाओं की संकीर्ण व्याख्या है। इसी संकीर्ण व्याख्या ने विश्व को आतंकवाद की चपेट में लिया है। अमेरिका में लगातार बन्दुक संस्कृति के दुष्प्रभावों में मूल्यविहीनता ही नजर आती है।

भारत जैसा बहुभाषा- बहुधर्म एवं बहु- नस्ल वाला राष्ट्र, जिसकी विविधता में एकता तथा गंगा - जमुनी तहजीब की दुहाई विश्वभर में दी जाती थी। आज वह आंतरिक अशांति से ग्रस्त है। हिन्दू - मुस्लिम, दलित - सवर्ण वैमनस्य का लगातार बढ़ना, कहीं न कहीं

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

ब्रिटिश फूट डालो और राज करो की नीति का ही परिणाम है। जानवरों के संरक्षण को मानव से अधिक महत्व देना, मानवता का विनाश है। अपवादों के आधार पर किसी की हत्या कर देना, इसी मूल्यविहीन शिक्षा का परिणाम है।

समाज में वैज्ञानिक-तार्किक चिंतन का अभाव आज भी समाज को सदियों पुराने अंधविश्वासों में जकड़े हुये है। जहाँ बच्ची के जन्म पर उसकी हत्या कर दी जाती है अथवा डायन कहकर उसे निर्वस्त्र कर जला दिया जाता है, यह सभ्य कहे जाने वाले समाज की मूल्य-विहीनता एवं पाशविक प्रवृत्ति को दर्शाता है। इसी मूल्यविहीनता ने पितृसत्ता के जाल से निकली नारी को वस्तु बना दिया है। इसी संदर्भ में एक कवि ने लिखा भी है -

"खुले-खुले बदन पर
साबुन का झाग हो गई है औरत,
पान-पराग हो गई है औरत।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

जिन मूल्यों ने प्रकृति प्रेम तथा प्रकृति के साथ सह अस्तित्व का पाठ पढ़ाया, उन्हें अनुपयुक्त समझकर शिक्षा पाठ्यक्रम से निकाल दिया गया। जिसका परिणाम ग्लोबल वार्मिंग, नदी प्रदूषण, वन अपरोपण, प्लास्टिक प्रदूषण जानवरों के प्रति असंवेदनशीलता के रूप में सामने आया। यही कारण है कि कॉलोनी में रहने वाले एक अधिकांश कुत्ते अपाहिज/विकलांग स्थिति में होते है। पर्यावरण के संदर्भ में गांधी जी ने पहले ही आगाह किया था किन्तु उनकी शिक्षा बच्चों तक पहुँची ही नही।

"प्रकृति मनुष्य की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम है किन्तु यह एक भी व्यक्ति की लालसा पूर्ण नहीं कर सकती।"

यही कारण है कि तकनीकी शिक्षा में अग्रणी अमेरिका ग्लोबल वार्मिंग को कम करने के वैश्विक प्रयास - पेरिस समझौते से अलग हो गया क्योंकि लाभ, स्वार्थ पर्यावरण से अधिक महत्वपूर्ण मान लिया गया।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

सबसे अधिक प्रभाव समाज को ही सेलना पड़ा है। इस मूल्यविहीनता ने जहाँ एक ओर गिद्ध बच्चे की मौत का इंतजार करते गिद्ध तस्वीर को प्रसिद्ध किया, वही दूसरी ओर रोड एक्सीडेंट में सेल्फी लेकर फोस्ट डालना तथा पीड़ितों से रुपये - मोबाइल छीनना सम्मिलित है। समाज ने सहयोग जैसे मूल्यों को खोकर सामाजिक पूँजी को नष्ट किया है।

मूल्यविहीनता ने संवैधानिक मूल्यों तथा आदर्शों के प्रति लगाव की भावना को भी दूर किया है। इसी का परिणाम है कि स्वतंत्रता दिवस 'वन्दे मातरम्' की बजाय वन डे मात्रम् का रूप धारण कर रहा है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर राष्ट्र-विरोधी भाषण देना आम बात हो गई है। मूल्यविहीनता ने धन के नाम पर राष्ट्र से विश्वासघात को भी बढ़ाया है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

विज्ञान का विकास मानवता के कल्याण के लिए किया गया था। मानवता को अनेक सपने विज्ञान के द्वारा दिखाये गये, जिनमें अंतरिक्ष तकनीकी का प्रयोग, सतत ऊर्जा, पर्यावरण संरक्षण सम्मिलित है किन्तु मूल्यविहीनता ने इसे स्पेस वार, परमाणु बम तथा पर्यावरण निम्नीकरण में बदल दिया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मूल्यविहीन शिक्षा व्यक्ति को चतुर शैतान बनाती है, जो प्रत्येक तकनीकी, विचार, वस्तु का प्रयोग स्वार्थ के लिए करता है, जिससे समाज में जो समन्वय होना चाहिए वह स्थापित नहीं हो पाता।

प्राचीनकाल में ~~xxx~~, अरस्तु, प्लेटो, चाणक्य, जैसे दार्शनिकों तथा वेद, पुराण आदि ग्रंथों के माध्यम से समाज में नैतिकता की स्थापना पर बल दिया गया, किन्तु धीरे-धीरे

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

शिक्षा में उपस्थित नैतिकता, व्यक्तिगत स्वार्थ में बदल गई, जिससे अनेक समस्याओं की उपस्थिति हुई। अतः यदि हमें एक शांत, सुन्दर, समतावादी, प्रगतिशील विश्व का विकास करना है, तो शिक्षा में मूल्यों का समावेश करना होगा तभी वैदिक काल का यह मंत्र साकार होगा -

" सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation